

Pre- Board Test -1 Solution

Subject – Hindi

Answers to this Paper must be written on the paper provided separately.

You will not be allowed to write during first 15 minutes.

This time is to be spent in reading the question paper.

The time given at the head of this Paper is the time allowed for writing the answers.

Section A is compulsory. Attempt any four questions from Section B.

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [].

SECTION - A (40 Marks)

(Attempt all questions from this Section)

Question 1

- (i) मित्र हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अगर हमारे पास अच्छे मित्र हैं तो जीवन अधिक मनोरंजक और सहनशील बन जाता है। यहां तक कि एक सच्चा दोस्त हमारे जीवन व व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। यही कारण है कि मित्र महत्वपूर्ण हैं:

सच्चे दोस्त एक-दूसरे के बेहद सहायक होते हैं। वे विभिन्न स्तरों पर एक दूसरे का समर्थन करते हैं। वे पढ़ाई और अन्य गतिविधियों की बात करते समय सहायता प्रदान करते हुए एक-दूसरे को सर्वोत्तम लाभ पहुँचाने में मदद करते हैं। जब भी मैं किसी कक्षा में उपस्थित नहीं हो पाता तो मेरे मित्र हमेशा अपने नोट्स को मेरे साथ साझा करने के लिए तैयार रहते हैं। यह मेरे लिए बहुत बड़ी मदद है। वे एक भावनात्मक समर्थन के रूप में भी कार्य करते हैं। जब भी मैं भावनात्मक रूप से कमजोर महसूस करता हूँ तो मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त के पास जाता हूँ। वह जानता है कि मुझे कैसे शांत करना है और उसे मेरी सहायता कैसे करनी है।

अच्छे दोस्त हमारे सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक भी होते हैं। वे हमें हर कदम पर मार्गदर्शन करने के लिए हमारे साथ मौजूद रहते हैं। जब भी मुझे अपने रिश्तों की बारे में बात करने, मेरे अध्ययन के समय का प्रबंधन करने या अन्य गतिविधियों में भाग लेने के बारे में सलाह की जरूरत होती है तो मेरे दोस्त मेरा मार्गदर्शन करने के लिए हमेशा मौजूद होते हैं। जब भी मैं भावनात्मक रूप से टूट जाता हूँ तब भी वे मेरा मार्गदर्शन करने के लिए तैयार रहते हैं। वे मुझे जीवन में सकारात्मक देखने और नकारात्मकता को दूर करने में मदद करते हैं।

यह तथ्य बिल्कुल सच है कि दोस्त होने से जीवन और अधिक मजेदार और सुखद बन जाता है। दोस्तों का आसपास होना बहुत ही मजेदार और रोमांचक है। मैं दोस्तों के साथ यात्राएं करना पसंद करता हूँ। हालांकि मैं परिवार के साथ घूमने का भी आनंद लेता हूँ लेकिन मित्रों के साथ करने वाली यात्राओं का आनंद बेमिसाल होता है। दोस्तों के साथ पार्टी करना, घंटों उनके साथ गपशप करना, खरीदारी करना और उनके साथ फिल्में देखने जाना और उटपटांग गतिविधियों में शामिल होना, जो केवल आपके दोस्त समझ सकते हैं, करना बहुत मजेदार होता है।

मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे कई दोस्त हैं जिनका व्यक्तित्व मुझसे मेल खाता है। वे मेरे जीवन को अद्भुत और खुशियों से भरा बनाते हैं। मित्र हमारे जीवन में वे व्यक्ति होते हैं, जो हमारे जीवन को जीने योग्य बनाएं। जीवन में सच्चे मित्र होना

उतना ही जरूरी है जितना हमारे खाने में नमक होना। जिस प्रकार नमक ना होने के कारण खाना एकदम बिना स्वाद का हो जाता है, ठीक उसी प्रकार मित्रों के बिना भी जीवन बेस्वाद लगने लगता है। एक सच्चा मित्र वो नहीं है जो आपके जीवन में घटित सारी घटनाओं को सुनें, एक सच्चा मित्र वह है जिसने आपके जीवन की घटनाएं आपके साथ जी हों। हालांकि यह भी उतना ही सच है कि यदि मित्र अच्छे न हों तो आपका जीवन कठिनाई से भरा भी हो सकता है क्योंकि संगत का असर हर इंसान के जीवन को प्रभावित करता है।

- (ii) किसी भी व्यवस्था में यदि रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार का रोग लग जाए तो वह न तो स्वस्थ रह सकती है और न ही सुचारु तरीके से कार्य कर सकती है। दुर्भाग्यवश अधिकांश सरकारी महकमे भी कुछ हद तक इसी रोग से पीड़ित दिखाई दे रहे हैं। यही कारण है कि आए दिन रिश्वतखोरी की खबरें आती रहती हैं कई रिश्वतखोर विजिलेंस की गिरफ्त में फंसते भी हैं। ये घटनाएं चिंतित करने वाली हैं, क्योंकि इससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि देश के सरकारी महकमों का शायद ही कोई ऐसा अंग हो जो रिश्वतखोरी के रोग से पीड़ित न हो। आम जनता को इसके दुष्परिणाम भुगतने पड़ ही रहे हैं, कहीं न कहीं सरकार को भी इससे नुकसान झेलना पड़ता है। रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के कारण ही कई बार सरकार की अच्छी और जनोपयोगी योजनाओं का लाभ भी आम जनता को नहीं मिल पाता। रिश्वतखोरी, लालफीताशाही और भ्रष्टाचार के कारण ही निवेशक निवेश करने से कतराते हैं और अंततः इससे विकास की गति पर भी असर पड़ता है। इतने नुकसान को देखते हुए तो यही कहा जा सकता है कि यदि इस रोग से मुक्ति मिल जाए तो देश का उद्धार हो जाएगा।

इधर, करीब 2 साल पहले ग्लोबल सिविल सोसायटी ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा किए गए एक सर्वे की रिपोर्ट— ग्लोबल करप्शन बैरोमीटर-एशिया में यह सामने आया था कि रिश्वतखोरी की दर भारत में सबसे आगे (39 प्रतिशत) है। वहीं रिश्वतखोरी के मामलों का आंकलन करने वाली संस्था ट्रेस द्वारा वर्ष 2021 में की गई रैंकिंग में 194 वें देशों में भारत का नम्बर 82वां रहा। जबकि इसके पूर्व भारत 77 वें नम्बर पर था। मतलब साफ है कि रिश्वतखोरी पर कोई भी अंकुश लगा पाने में कानून और व्यवस्था दोनों फेल रहे हैं।

यदि भ्रष्टाचार को पूर्ण रूप से उखाड़ फेंकना है तो सबसे पहले हमारी केंद्र एवं राज्य सरकार में ऐसे लोगों को लाना होगा जो अपने परिवार और पार्टी की बजाय देश का हित सोचे। सौभाग्य से भारत को अब एक ऐसा प्रधान मिला है। मगर एक व्यक्ति के प्रयास से विदेशों में भारत की लूट का भरा धन वापिस लाना, सिस्टम को पाक साफ करना, भ्रष्ट लोगों को व्यवस्था से बाहर करना संभव नहीं है इसके लिए देश के प्रत्येक नागरिक को आगे आना होगा। विजिलेंस ब्यूरो जैसी संस्थाएं इसके इलाज में लगी भी हैं, लेकिन बीमारी इस कदर अपनी जड़ें जमा चुकी है कि बिना सामाजिक सहभागिता व सरकार के दृढ़निश्चय के इससे उबर पाना कठिन प्रतीत होता है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार के खिलाफ और सख्त कदम उठाएगी। आम जनता को भी रिश्वत देकर काम कराने की मनोवृत्ति से उबरना होगा, तभी इस रोग का कारगर इलाज संभव है।

- (iii) मानव अपने स्वभाव से जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है अर्थात् वह हर पल कुछ न कुछ नया जानने में लगा रहता है। उनकी यह ललक न केवल अपने मतलब तक चीजों से जुड़ी होती है बल्कि वह नई नई जगहों आदि के बारे में जानकारी इकट्ठा करता रहता है। आज इंटरनेट पर प्रत्येक स्थान की जानकारी उपलब्ध है मगर साक्षात् अनुभव एवं दर्शन की ललक उन्हें देखने से ही पूरी होती है। इस तरह से कोई व्यक्ति अपने या दूसरे देश के भूभाग में प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक स्थलों, स्मारकों, पर्वतों, सभ्यता, संस्कृति का अवलोकन करने जाता है तो उसे देशाटन कहा जाता है। देशाटन का अतीत उतना ही पुराना है जितना कि मानव का प्राचीन काल में भी बड़ी मात्रा में देशाटन हुआ करते थे। मध्यकाल तथा उससे पूर्व दसवीं सदी तक के समय में कई विदेशी यात्री भारत में देशाटन के लिए आए थे। फाहियान, ह्वेनसान, इब्नबतूता जैसे यात्रियों ने यहाँ भ्रमण कर भारत की संस्कृति, सभ्यता एवं लोगों के जीवन रहन सहन आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। जो भी विदेशी यात्री भारत आया, उसने अपनी पुस्तक में भारत के स्वरूप यहाँ के लोगों के बारे में विस्तृत वर्णन किया है। भिन्न भिन्न नये स्थानों के देशाटन के कई सारे फायदे हैं। आज के दौर में देश विदेश की यात्राओं से जो सुख व अनुभव मिलते हैं वे अन्यत्र असम्भव हैं। देशाटन का सबसे बड़ा फायदा यह है कि हमारे ज्ञान एवं अनुभव में वृद्धि होती है। नये नये स्थानों तथा लोगों से मिलने उनकी संस्कृति रीति रिवाज रहन सहन, भाषा का परिचय होता है। प्राकृतिक स्थलों का देशाटन से हम प्रकृति के नये नये रूपों से अवगत होते हैं। ऐतिहासिक स्थल व स्मारक हमारे इतिहास के ज्ञान को ताजा

करते हैं। हमें उस समय की कला संस्कृति तथा ज्ञान का अनुभव मिलता है। अधिकतर लोग शौक से भी देशाटन करते हैं ऐसा करने से उनके मन को शांति, जीवन में नई ऊर्जा का संचार होता है। कुछ समय पहले मैं अपने परिवार के साथ अंडमान निकोबार द्वीप समूह की यात्रा पर गई थी। वहाँ जाकर पता लगा कि यह द्वीप 572 छोटे बड़े द्वीपों का एक समूह है। इनमें से केवल 38 द्वीप ऐसे हैं जहाँ पर स्थायी रूप से आदिवासी लोग रहते हैं। प्राचीन कल से ही इन द्वीप समूहों का भारत के लिए एक सामरिक महत्व रहा है। ये द्वीप समूह प्राकृतिक रूप से काफी सुंदर हैं। यहाँ के सागर तट दुनिया के सबसे सुंदर तटों में गिने जाते हैं। यहाँ जाने से पहले मेरा यह अनुमान था कि यहाँ पर रहने वाले सभी लोग तमिल भाषा बोलने वाले होंगे लेकिन मेरा यह भ्रम वहाँ जाकर टूट गया। मुझे पता लगा कि वहाँ पर रहने वाले लोगों में अधिकांश लोग बंगाली भाषा बोलने वाले थे। वहाँ पर व्यवसाय करने वाले लोगों में भी बंगाली लोगों का प्रभाव अधिक दिखाई दिया। अंडमान के ग्रामीण इलाकों में तो हमारी मुलाकात झारखंड के मूल निवासियों से भी हुई।

हमारे देश के स्वतन्त्रता सेनानी वीर सावरकर का अंडमान से गहरा नाता है। उनके जीवन के कई वर्ष पोर्ट ब्लेयर में स्थित सर्कुलर जेल में भारी कष्ट के साथ व्यतीत हुए थे। स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान अंग्रेजों ने उनकी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए इस जेल में, जिसको काला पानी की सजा भी कहा जाता है, उनको बंदी बनाकर रखा था। इस यात्रा के दौरान मैंने बहुत सारे प्राचीन म्यूजियम भी देखे। समुद्र के अंदर डाइविंग का भी आनंद लिया। कई प्रकार के औपध्रीय बगीचों की भी सैर की जिससे मेरा काफी ज्ञानवर्धन हुआ।

यह कहा जा सकता है कि देशाटन से हमारे विचार और व्यक्तित्व दोनों निखरते हैं तथा इससे सहिष्णुता, मुक्त और उदार विचार, व्यवहारकुशलता आदि की वृद्धि होती है। इससे मनुष्य पूर्वाग्रहों से मुक्त होता है। मैं तो यही कहूँगी—

सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहाँ? जिंदगानी गर मिली, तो नौजवानी फिर कहाँ?

- (iv) हमारे समाज में डॉक्टर को भगवान का दर्जा दिया गया है, क्योंकि वही एक ऐसा शख्स है, जो किसी को मौत के मुंह में जाने से बचा सकता है। तिल-तिल मरते किसी इंसान को जिंदगी दे सकता है और खाई हुई उम्मीदों को जीता-जागता उत्साह दे सकता है। जाहिर सी बात है कि धरती पर एक डॉक्टर ही साक्षात ईश्वर का काम करता है और इसके लिए उनके प्रति जितना कृतज्ञ हुआ जाए कम ही होगा। डॉक्टर्स को प्राप्त इस देव पद के सम्मान में 1 जुलाई को हम डॉक्टर्स डे भी मनाते हैं।

कभी-कभी अंतरमन से निकलते इस पवित्र भाव को बनाए रखना भी बड़ा मुश्किल होता है। अब सवाल यह उठता है, कि डॉक्टर्स डे तो मना लें, लेकिन किसके लिए मनाएं...। हमारे भाव तो डॉक्टर्स के प्रति बिल्कुल सही हैं, लेकिन क्या चिकित्सक सच में देवता रह गया है? जगह जगह पर चिकित्सकों द्वारा मरीज को लूटते हुये देखा जा सकता है बस कुछ पैसे के लिए चिकित्सक मानवता को शर्मसार कर रहे हैं। यूँ भी अब सेहत, व्यवसाय बन चुकी है, जहाँ डॉक्टर्स की प्राथमिकता सिर्फ मरीजों का इलाज ही नहीं, बल्कि उनसे मोटी रकम ऐंठना भी है। अस्पताल में दाखिल होते ही कई तरह की गैर जरूरी जांचें, जिनका कोई बार बीमारी से संबंध ही नहीं होता, आवश्यक तौर पर कराने की सलाह दी जाती है। बीमारी से परेशान मरीज और अपने के दुख से दुखी रिश्तेदार डरे-सहमे जांचें कराते भी हैं और कहीं से भी इंतजाम करके उतना पैसा भरते भी हैं, जितना कमाने में शायद उनकी जिंदगी निकल चुकी होती है। इन सब के बावजूद, मरीजों की न तो ठीक से देखभाल हो पाती है और न ही डॉक्टर्स के पास उन्हें देखने का समय होता है। देवता के इस अवतार को मान मनुहार करके बुलाया जाता है मरीज को देखने के लिए।

सरकारी अस्पतालों में तो स्थिति और भी भयानक है। यहाँ सिर्फ अपने आराम और वेतन की परवाह की जाती है, और न मिल पाने वाली सुविधाओं के विरोध में आंदोलन करने की। लेकिन मरीज कहां किस कोने में कराह रहा है इसका ख्याल तक नहीं होता। सरकारी अस्पतालों की स्थिति देखकर तो काफ़्यूजन होता है कि लोग वहाँ ठीक होने के लिए जाते हैं या और बीमार होने के लिए। अधमरे इंसान की तो वहाँ मौत तय है।

क्या ये सभी स्थितियाँ, डॉक्टर्स की धोर लापरवाहियाँ नहीं...क्या अब भी कहा जा सकता है, कि डॉक्टर में भगवान बसते हैं.. और यदि ऐसा है, तो इन देवताओं को अपने प्रति सम्मान बनाए रखने के लिए अधिक प्रयास करने की जरूरत है, वरना आम जनता का विश्वास एक दिन जरूर इस भगवान से उठ जाएगा। आज भी कुछ ऐसे चिकित्सक इस समाज में हैं जो कि मानवता की लाज रख रहे हैं। वे इस बात को सिद्ध कर रहे हैं कि वो समाज के ऊपर धब्बा लगाने के लिए

पैदा नहीं हुए हैं इन जैसे चिकित्सकों की वजह से ही मानव समाज की लाज बची हुयी है नहीं तो अभी तक तो लोभी चिकित्सक कब का समाज लूट चुके होते तथा मानवता कलकित हो गयी होती।

- (v) दिया गया चित्र सुबह के प्रकृतिक सौंदर्य को दर्शा रहा है। पूर्व दिशा में पहाड़ों के बीच सूर्योदय हो रहा है। एक बच्चा सूर्य को प्रणाम करते हुए प्रार्थना कर रहा है। प्रातः काल का दृश्य अत्यन्त मनोरम दिखाई दे रहा है।

सुबह-सुबह सभी ओर अनेक जन सूर्य देवता को नमन करते हुए दिखाई देते हैं। चारों ओर शीतल, सुगन्धित तथा मन्द-मन्द समीर बहती रहती है जो सभी को शीतलता प्रदान करती है। इस समय का वातावरण बहुत शुद्ध, मनोहारी, शान्त एवं स्फूर्तिदायक होता है।

इस समय की वायु में ऑक्सीजन की मात्रा बहुत अधिक होती है तथा यह वायु प्रदूषण रहित होती है जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभदायक है। इस समय पक्षीगण अपने-अपने घोंसलों से निकल कर अपने तथा अपने बच्चों के लिए भोजन प्राप्त करने के लिए आकाश में उड़ते हुए दिखाई देते हैं। चारों ओर उड़ती हुई चिड़ियों की चहचहाहट तथा अन्य पक्षियों का कलरव बहुत मनोहारी लगता है। वह ऐसा लगता है मानों कहीं कर्णाप्रिय संगीत बज रहा है।

बाग-बगीचों में खिले फल अपनी प्यारी-प्यारी मुस्कराहट और सुगन्ध से सभी को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं तथा लोग बरबस ही उन सुन्दर फूलों की ओर खिंचे चले जाते हैं। उस समय घास पर पड़ी ओस की बूँदें मोतियों के समान सुन्दर व लुभावनी दिखती हैं।

प्रातः काल का समय भ्रमण के लिए बहुत उचित समय होता है। इस समय भ्रमण करने से शरीर स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट रहता है। शरीर में सारा दिन चुस्ती एवं फुर्ती बनी रहती है। हम सब को चाहिए कि इस समय के सुहावने व मनोहारी दृश्यों का भरपूर आनन्द उठाएँ।

Question 2

पत्र-लेखन

- (i) 18, गंगा निवास,
तिलकनगर,
पटेल रोड,
आगरा- 282003
दिनांक 8/8/2000
सेवा में,
प्राधानाचार्य महोदय,
कृष्णा पब्लिक स्कूल,
पटेल रोड,
आगरा- 282003

विषय: पर्यटन स्थल की जानकारी देने हेतु।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय का कक्षा दसवीं का छात्र हूँ। इस वर्ष ग्रीष्मबकाश की छुट्टियों में मैंने लोनावला जाना तय किया है। हम पाँच दोस्त मिलकर जा रहे हैं। इस पर्यटन स्थल की जानकारी देते हुए मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। हम सभी रेलगाड़ी से जा रहे हैं। लोनावला हिल स्टेशन का वातावरण बहुत ही सुंदर और मन को प्रसन्न करनेवाला है। वहाँ का मौसम बहुत ठंडा है मैंने वहाँ के प्रसिद्ध स्थान जैसे लोनावला झील, मंकी पॉइंट, टाइगर पॉइंट, लायंस पॉइंट, खंडाला सनसेट पॉइंट, राजमाचो किला, सुनील वैक्स म्यूजियम की जानकारी भी ढूँढ कर रखी है। रोज घूमने के लिए एक गाड़ी का इंतजाम भी किया है। लोनावला की चिक्की भी बहुत प्रसिद्ध है, जो मुझे बेहद पसंद है।

इस वर्ष विद्यालय द्वारा आयोजित कैंप में हम सब लोनावला जाएँगे। आपको भी वहाँ बहुत अच्छा लगेगा।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी छात्र,
महेश रस्तोगी

(ii) 494, कालकाजी,
नई दिल्ली 110023
दिनांक 6/0/0000

प्रिय अनुज अभी

शुभाशीष।

मैं यहाँ कुशलता से हूँ। आशा करता हूँ तुम भी कुशलता से होंगे। आज की डाक से माता जी का पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ। कि तुम नवीं कक्षा की परीक्षा में सफल नहीं हो सके हो। मुझे इस वर्ष पहले से ही तुम्हारे उत्तीर्ण होने की आशा कम थी, क्योंकि वर्ष में पूरे पाँच महीने तुम बीमार रहे। स्कूल भी न जा सके। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। इसमें निराशा होने की कोई बात नहीं है।

जीवन में सफलता-असफलता तो आती-जाती रहती है। असफल होना भी कभी-कभी वरदान सिद्ध होता है। किसी ने ठीक ही कहा है-असफलता, सफलता की सीढ़ी है। सामान्य सफलता की अपेक्षा शानदार सफलता प्राप्त करना कहीं श्रेयस्कर है। विफलता पुनः तैयार होने का एक संकेत है। अतः अभी से अगली परीक्षा की तैयारी करो और प्रथम आकर इस विफलता के अभिशाप को वरदान में बदल दो। मुझे पूर्ण आशा है कि तुम अपने हृदय से निराशा का भाव त्याग दोगे तथा पूर्ण आशा के साथ अध्ययन में जुट जाओगे। परम पूज्य माता जी को सादर प्रणाम एवं पिताजी को चरण स्पर्श टीटू तथा नीटू को प्यार।

तुम्हारा अग्रज

दिनेश

Question 3

- (i) विद्या को मनुष्य का तीसरा नेत्र बताया गया है। हमारी आंखें तो केवल वही देख पाती हैं जो जगत उसके सम्मुख उपस्थित होता है।
- (ii) गांधीजी के बारे में कहा जाता है कि वे अवकाश का एक भी क्षण ऐसा नहीं जाने देते थे जिसमें वह कुछ पढ़ते ही ना हो। वह अपना अधिकतर समय पुस्तकें पढ़ने में बिताते थे।
- (iii) विद्या की प्राप्ति निरंतर अध्ययन से ही होती है। विश्व के महापुरुषों की सफलता और प्रसिद्धि के पीछे गहन अध्ययन की प्रवृत्ति होती है। अध्ययन ही उनके जीवन का मूल मंत्र है।
- (iv) मनुष्य का सच्चा मित्र पुस्तकें होती हैं। मनुष्य चाहे कितना भी सच्चा और प्रिय साथी क्यों ना हो उसकी एक सीमा होती है, वह तभी तक उसके साथ मित्रता निभा सकता है जब तक वह जीवित है। मनुष्य का मन कभी भी बदल सकता है इसके विपरीत ज्ञान अमर है। पुस्तकें एक-दो वर्ष नहीं अपितु हजारों वर्ष तक मनुष्य का साथ देती हैं।
- (v) मनुष्य का अकंलापन पुस्तकें पढ़ने से दूर होता है। यदि उसकी अलमारी में कुछ रोचक एवं शिक्षाप्रद पुस्तकें रखी हैं तो उसकी सारी उदासी दूर हो जाती है। अकंलापन दूर करने की सामग्री पुस्तकों में मिल जाती है।

Question 4

- (i) (B)
- (ii) (A)
- (iii) (B)
- (iv) (C)

- (v) (C)
- (vi) (D)
- (vii) (D)
- (viii) (D)

Question 5

- (i) नेताजी की मूर्ति पर चश्मा नहीं था, क्योंकि मूर्तिकार बनाना भूल गया था। लेकिन उनकी यह कमी कस्बे के कैप्टन चश्मे वाले को खटकती थी और आहत करती थी। इसलिए वह अपने गिने-चुने फ्रेमों में से एक चश्मा मूर्ति पर लगा दिया करता था।
- (ii) कैप्टन एक बूढ़ा चश्मे बेचने वाला व्यक्ति है। वह एक अच्छी सोच रखने वाला देश भक्त है। नेताजी की प्रतिभा में जो कमी रह गई है वह उसे सहन नहीं कर सकता तथा अपनी ओर से उसे पूरा करने का भरसक प्रयत्न करता है। उसका नेताजी से कोई सम्बन्ध नहीं है। उसके हृदय में स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति आदर व सम्मान है।
- (iii) पान वाला एक काला, मोटा, खुशमिजाज व्यक्ति है। किसी के अच्छे काम का मूल्यांकन करने की योग्यता उसमें नहीं है। वह सामान्य विचारों वाला आदमी है। हर समय पान खाते रहने से उसकी बत्तीसी लाल-काली हो गई थी।
- (iv) 'नेताजी का चश्मा' शीर्षक 'जिज्ञासा' से धरा है। मास्टर मोतीलाल नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति पर चश्मा लगाना भूल जाते हैं, जिसके बिना वह अधूरी है। उसे पूरा किया जाता है बाहर से चश्मा लगाकर जो अत्यन्त जिज्ञासापूर्ण है कि ऐसा क्यों होता है? पूरी कहानी का कलेवर ही नेताजी के चश्मे से पूरित है। चौराहे पर नेताजी की मूर्ति का लगाना, उसमें चश्मे का न होना, कैप्टन द्वारा चश्मा लगाना कैप्टन की मृत्यु के बाद बच्चों द्वारा सरकंडे से बना चश्मा लगाकर नेताजी की मूर्ति की पहनाना एक ऐसी देशभक्ति का प्रतीक है जिससे हालदार साहब भावुक हो उठते हैं। कहानी का यह शीर्षक सार्थक व उद्देश्यपूर्ण भी है।

Question 6

- (i) वक्ता बालक है। वह कहानी का मुख्य पात्र है। वह दस वर्ष का एक गरीब बालक है। जो अत्यन्त स्वाभिमानी एवं मेहनती है। उसका भाग्य उसका साथ नहीं देता। उसकी नौकरी भी छूट गई है। कोई उसकी जिम्मेदारी नहीं लेता। सब उसे कोहरे में भाग्य के हाथों मरने के लिए छोड़ देते हैं।
- (ii) वह बालक पन्द्रह कोस दूर गाँव से अपने से बड़े एक साथी के साथ नैनीताल भाग आया था। क्योंकि घर में उसके पास खाने को भोजन भी नहीं था। माँ-बाप भाई-बहन सब भूखे रहते थे। काम और खाने की तलाश में वह घर से भाग आया था।
- (iii) नहीं, किसी ने भी बालक की दयनीय स्थिति पर तरस नहीं खाया। वकील मित्र ने नौकरी देने से इंकार कर दिया। लेखक और उसके मित्र केवल अफसोस जता कर रह गए। उसको रात गुजारने का स्थान मिला और न ही नया काम मिल पाया।
- (iv) दुर्भाग्य के कारण बालक को रात गुजारने के लिए कोई स्थान न मिल पाया उसने रात सड़क के किनारे, पेड़ की नीचे बिताई। भयंकर शीत के कारण उसकी मृत्यु हो गई। दुनिया की बेहयाई छिपाने के लिए प्रकृति ने उसके मुँह, छाती और मुट्ठियों पर बर्फ की चादर बिछा दी। वही प्रकृति द्वारा दिया गया सफेद ठण्डा कफन था।

Question 7

- (i) श्यामू एक छोटा-सा बालक था जिसकी माँ की मृत्यु हो गयी थी। माँ की मृत्यु का शोक उसके हृदय में जाकर बस गया था।
- (ii) श्यामू प्रतिदिन शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता था। एक दिन आसमान में उड़ती पतंग देखकर उसका हृदय खिल उठा। उसने अपने पिता से एक पतंग माँगी।

Question 8

- (i) कवि के अनुसार इस संसार में लगभग सभी लोग स्वार्थी हैं। सारे रिश्ते स्वार्थ को लेकर ही हैं। सब लोग अपने मतलब के कारण ही मित्रता करते हैं।
- (ii) कवि मित्रों के विषय में बताते हैं कि इस मतलबी संसार में लोग अपने मतलब के लिए मित्रता करते हैं तथा अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर अर्थात् मतलब निकल जाने पर रिश्ता तोड़ लेते हैं। ऐसे व्यवहार को मतलब का व्यवहार कहते हैं। जब तक आपके पास धन है वह आपके आगे-पीछे घूमते हैं धन न रहने पर वह आपसे मुँह से भी नहीं बोलते।
- (iii) इस संसार में यही चला आ रहा है कि लोग रुपए-पैसे वालों से रिश्ता जोड़ते हैं उनसे मित्रता करते हैं और गरीबों से कतराते हैं। धनी लोगों के बहुत मित्र बन जाते हैं, पर निर्धन लोगों का कोई मित्र नहीं होता। इस संसार में सभी लोग केवल अपने स्वार्थ, अपने मतलब के लिए मित्रता का ढोंग करते हैं। निःस्वार्थ या बेगरज मित्रता या प्रीति करने वाले लोग इस संसार में बहुत कम (विरले) ही होते हैं।
- (iv) मित्रता एक बहुत सुन्दर पवित्र महान रिश्ता है। सच्चा मित्र जीवन में बहुत उपयोगी होता है। जो हमारे दुर्गुणों को दूर करता है तथा सद्गुणों का संचार करता है। कृष्ण-सुदामा की मैत्री का प्रसंग पढ़कर हमें सच्ची मित्रता की महानता का ज्ञान होता है। सच्चा मित्र वही होता है जो मुसीबत के समय आपका साथ दे। जब आप को उसकी जरूरत हो वह आपके साथ खड़ा रहे। जिसकी मित्रता आपसे हो आपके धन से नहीं।

Question 9

- (i) प्रस्तुत कविता देश प्रेम पर आधारित है। उसमें कवि ने अपने देश भारत के प्राकृतिक, आध्यात्मिक तथा भौगोलिक रूपों का अत्यन्त सुन्दर एवं सजीव वर्णन किया है। एवं देश में जन्में महावीरों का गुणगान किया है।
- (ii) कवि ने भारत वर्ष को युद्ध भूमि कहा है, क्योंकि वह उनका संघर्ष-क्षेत्र है। अपने कर्तव्य को सर्वोपरि मानकर सदैव कर्मरत रहना भारतवासियों की विशेषता है। युद्ध भूमि से कवि का आशय है कि हमारे देश की धरती पर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले गौतम बुद्ध ने जन्म लिया था। उन्होंने हिंसा न करने तथा सभी जीवों पर दया करने का उपदेश दिया था।
- (iii) कवि ने भारत वर्ष के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा कि भारत के उत्तर में स्थित हिमालय इतना ऊँचा एवं विशाल है कि जैसे आकाश को चूमना चाहता है। दक्षिण में समुद्र दिखाई देता है। गंगा यमुना तथा सरस्वती जैसी पवित्र नदियाँ बहती हैं। पहाड़ों से अनेक झरने बहते हैं। झाड़ियों में उड़ती, उछलकूद करती चिड़ियों के खुश होकर चहचहाने की आवाज सुनाई देती है। आम के सुन्दर-सघन बगीचों में बौर आने पर मधुर आवाज में गाती है। मलायचल पर्वतों से आने वाली शीतल, मंद एवं सुगंधित वायु हमारे तन-मन को ताजगी से भर देती है।
- (iv) कवि ने भारत का गुणगान करते हुए कहा है कि इस पवित्र भूमि में श्रीराम एवं सीताजी का जन्म हुआ था। यहीं पर श्रीकृष्ण ने जन्म लेकर वंशी की मीठी धुन सबको सुनाई थी। यही वह पुण्यभूमि है जहाँ पर गौतम बुद्ध ने जन्म लिया। कवि ने इस कविता में अपने देश भारत के प्राकृतिक, आध्यात्मिक तथा भौगोलिक रूपों का अत्यन्त सुन्दर एवं

Question 10

- (i) उपर्युक्त पंक्तियों में पेड़ नगरवासियों का प्रतीक बताया गया है। जिस प्रकार गाँव के लोग झुक-झुककर मेहमान को प्रणाम करते हैं, ठीक उसी प्रकार पेड़ भी अपने गरदन उचकाकर मेहमानों को देखते हैं। धूल एक दौड़ती हुई युवती का प्रतीक है जो आए हुए मेहमान को देखकर भागी चली जा रही है तथा कवि ने नदी को वधुओं का प्रतीक बताया है, जो घूँघट करके अनेक मेहमानों को देखते हैं।
- (ii) प्रस्तुत पंक्तियों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी द्वारा आकाश में बादलों के घिर आने के माध्यम से किसी शहरी से गाँव में आए मेहमान का मानवीकरण किया गया है। जब मेघ आ गए तो पेड़ों का गरदन उचकाकर उन्हें देखने लगते हैं। अतः भाव यह है कि जब पुरवाई हवा चलती है तो पेड़ों की टहनियाँ झुक जाती हैं और तब ऐसा प्रतीत होता है कि मानों मेघों के आगमन पर पेड़ गरदन झुकाए अत्यन्त उल्लास एवं उत्सुकता से मेघों को देख रहे हैं।
- (iii) मेघ आकाश में छाए हैं। कवि ने मेघों का मानवीकरण करते हुए गाँव में आए किसी शहरी मेहमान से उसकी तुलना की है। जिस प्रकार कोई अतिथि बन-संवरकर शहर से गाँव में आता है, उसी प्रकार मेघ भी सज-धज कर बन ठन कर आ पहुँचे हैं। मेघों के आने से सारी प्रकृति झूमने लगी है। चारों ओर ठंडी-ठंडी हवाएँ चलने लगी हैं। धूल उड़ने लगी है। बूढ़ा पीपल भी सिर झुकाकर मेघों का अभिवादन कर रहा है। सभी ताल तलैयाँ में पानी भर आया है। मेघों के आने की प्रसन्नता सम्पूर्ण प्रकृति में व्याप्त हो उठी है।

नया रास्ता

Question 11

- (i) वक्ता मीनू है जो अमित को देखने अस्पताल पहुँची। वह अस्पताल में मरीज देखने का जो समय निश्चित था उससे एक घंटा पहले पहुँच गई थी। वह अमित की हालत सुनकर परेशान थी और जल्दी-से-जल्दी उसे देखना चाहती थी।
- (ii) मीनू को अस्पताल के लॉन में एक घंटे बैठकर इंतजार करना था। इंतजार का समय बहुत बड़ा लगता है तथा मुश्किल से व्यतीत होता है। उस इंतजार में बेचैनी का भाव भी होता है। समय को बिताने के लिए यद्यपि उसने पत्रिका खरीद ली थी और उसको पढ़ना भी आरम्भ कर दिया था, लेकिन हर थोड़ी देर बाद वह घड़ी में समय देखती थी।
- (iii) मीनू के इस इंतजार का वास्तविक उद्देश्य अमित को देखना था और उसकी हालत का समाचार जानना था। वह अमित से मिलकर उसके स्वास्थ्य के बारे में जानने के लिए बेचैन थी।
- (iv) मीनू अस्पताल में समय से पहले पहुँच गई थी अतः उसके सामने यह प्रश्न था कि वह एक घंटा किस प्रकार व्यतीत करे। यह कथन मीनू का एक घंटा व्यतीत करने के परिप्रेक्ष्य में कहा गया है।

Question 12

- (i) होस्टल पहुँचने पर किताब पढ़ते-पढ़ते मीनू अतीत की स्मृतियों में खो गई। जब वह छोटी थी तब पिताजी ने उससे पूछा था कि वह पढ़ लिखकर क्या बनेगी। मीनू ने कहा था कि वह वकील बनना चाहती है यह सुनकर माँ ने डाँटते हुए कहा था कि वकील बगैरह कुछ नहीं बनना है। कौन पढ़ाएगा तुझे इतना। बस अठारह साल की उम्र में शादी कर देंगे। लड़को की बात और है। माँ की ये बातें सुनकर मीनू के दिल को ठेस पहुँची थी।
- (ii) मीनू बचपन से ही पढ़ने लिखने में तेज थी। उसने एम.ए. प्रथम श्रेणी में पास किया था। यह इस बात का प्रमाण है कि मीनू एक मेधावी छात्र थी और वह अपना वकील बनने का सपना अवश्य पूरा करेगी।
- (iii) मीनू बचपन से ही वकील बनने का सपना देखती थी। परन्तु माँ के विचार थे कि लड़कियों को ज्यादा पढ़ाने-लिखाने की आवश्यकता नहीं है। अठारह साल की उम्र में उनकी शादी कर देनी चाहिए। माँ की इच्छा का आदर करते हुए

आज्ञा दे दी।

Question 13

- (i) मीनू को मीरापुर जाना था। क्योंकि वहाँ से टेलीग्राम आया था कि मीनू के पिताजी बीमार हैं और उसे शीघ्र बुलाया था।
- (ii) मीनू अपने पिता से मिलने मीरापुर जाना चाहती थी परन्तु रात हो जाने के कारण तथा मीनू का रात में अकेले जाना भी ठीक नहीं था और रास्ता भी खराब था। इस वजह से मीनू की दशा पिंजड़े में बन्द एक पक्षी की तरह थी। जिसके हृदय में उड़ जाने के लिए छटपटाहट दी।
- (iii) मीनू को जब टेलीग्राम से खबर मिली तब तक अंधेरा हो चुका था। मीरापुर जाने का रास्ता भी खराब था और रात में मीनू का अकेले जाना ठीक नहीं था। उसे अगले दिन जाने का सुझाव उसकी मित्र माया ने दिया।
- (iv) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके लिए रिश्ते का बहुत महत्व होता है। रिश्ते-नाते ही तो उसके जीने का सहारा होते हैं। जिनके साथ वह अपने दुख-सुख बाँटता है। यह रिश्ते ही तो मनुष्य के जीवन को अर्थ प्रदान करते हैं। हर रिश्ते की अपनी एक खासियत और खूबसूरती होती है। बचपन में माता-पिता भाई-बहन और विवाह के बाद सास-ससुर पति और बच्चे। यह खूबसूरत रिश्ते ही तो जीवन में रंग भरते हैं।

एकांकी संचय

Question 14

- (i) हाड़ाओं के हाथों पराजित होकर महाराजा लाखा क्रोध की अग्नि में जल रहे थे। उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि जब तक वह बूँदी के दुर्ग में सेना के सहित प्रवेश नहीं कर लेंगे तब तक अन्न जल ग्रहण नहीं करेंगे परन्तु अभय सिंह और चारणी के समझाने पर कि युद्ध का समय उचित नहीं है, क्योंकि राजपूतों का संगठित होना जरूरी था। इसलिए महाराणा की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए बूँदी का नकली दुर्ग बनाने की विवशता आ गई।
- (ii) यहाँ वक्ता महाराणा लाखा हैं महाराजा लाखा को नीमरा के मैदान में बूँदी के राव हेमू से पराजित होकर भागना पड़ा। इसीलिए उनकी आत्मा उनको धिक्कार रही थी। इसे वह अपनी बीरता पर कलंक मानते थे। इसी अपमान का बदला लेने के लिए वह कटिवद्ध दिख रहे हैं।
- (iii) हाड़ाओं ने रात के समय अचानक शिविर पर आक्रमण कर दिया था। आकस्मिक धावे से घबराकर मेवाड़ के सैनिक भाग खड़े हुए। महाराजा लाखा तो प्राणों पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे पर उनके मन्त्री उनको वहाँ से खींच लाए।
- (iv) यह बात सौ प्रतिशत सच है कि केवल अपने मन की शान्ति के लिए किए गए कार्यों का परिणाम कभी अच्छा नहीं होता। जिस प्रकार इस एकांकी में यदि महाराजा लाखा अपने अपमान का बदला लेने के लिए बूँदी राज्य पर चढ़ाई कर देते तो राजपूतों की एकता की शृंखला टूट जाती और विदेशी शासकों के सामने वे कमजोर पड़ जाते।

Question 15

- (i) वक्ता कमला की सास और जीवनलाल की पत्नी राजेश्वरी हैं। जब उसे ज्ञात होता है कि जीवनलाल ने वहू को मायके भेजने के लिए पाँच हजार रुपयों की माँग की है तो उसे बहुत दुख होता है। वह प्रमोद की आर्थिक स्थिति के विषय में जानती है। इसलिए प्रमोद से कहती है कि मैं तुम्हें वह रूपए दे देती हूँ। जिससे तुम उन्हें देकर अपनी बहन की विदा करा ले जाओ।
- (ii) श्रोता प्रमोद को वह सुझाव देती है कि वह उन रुपयों को जीवनलाल को दे दे। उसे तो केवल रुपयों से मतलब है। अतः ये रूपए ले जाकर उनके मुँह पर मार देना। इसका अभिप्राय है कि जो केवल रुपयों को ही अपना सगा-सम्बन्धी मानता है तो उसे रुपयों से ही मतलब होगा। इसलिए इन रुपयों को देकर तुम अपनी बहन की विदा करा लेना।
- (iii) कागज के रंग-बिरंगे टुकड़ों से अभिप्राय है—कागज के नोट। वह पाँच हजार रुपयों के नोट जिनकी माँग जीवनलाल ने कमला की विदा करने के लिए की थी। जीवनलाल के जीवन में नोटों का अधिक महत्व था वजाए किसी इंसान की भावनाओं के। राजेश्वरी इसी कारण से बहुत क्षुब्ध है। इसीलिए वह चिढ़कर कहती है कि कागज के इन रंग-बिरंगे टुकड़ों को उनके मुँह पर मार देना।
- (iv) वक्ता राजेश्वरी जीवनलाल की पत्नी और कमला की सास हैं। वह बहुत सहृदय महिला हैं और अपनी बहू को अपनी बेटी की तरह मानती हैं। वह चाहती थी कि जीवनलाल भी कमला की भावनाओं को समझे और उसे मायके लिए उसके भाई के साथ विदा कर दे। किन्तु वह जीवनलाल को भी जानती है कि वह रुपयों का लालची है। भावनाओं से उसे कुछ लेना-देना नहीं है। राजेश्वरी प्रमोद की आर्थिक स्थिति समझते हुए कहती है कि मैं देती हूँ तुम्हें रूपए। इस प्रकार राजेश्वरी मानवीय संवेदनाओं को महत्त्व देने वाली वात्सल्यमयी सास हैं।

Question 16

- (i) उपर्युक्त प्रश्न पन्ना, सोना से पूछ रही है।
- (ii) उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए सोना कहती है कि फूल कुछ कहता नहीं है, बल्कि अपनी सुगन्ध बिखेर देता है। दीपक कोई सन्देश नहीं भेजता, बल्कि पतंगे आप-से-आप उसके पास आ जाते हैं।
- (iii) पन्ना उदय सिंह को न भेजने के विषय में सोना से यह कहती है कि कैसे भेज देती? इतने आदमियों के बीच उसे कैसे भेज देती? महाराज साँगा के वंश के एक वही तो उजाले हैं। महाराजा रतन सिंह ही वर्ष राज करके सूर्यलोक चले गए। विक्रमादित्य भी वनवीर की कूटनीति से अधिक दिनों तक बच नहीं पाएँगे।
- (iv) चन्दन कहता है कि माँ! इतनी कविता बनाने वाली, इतने गीत सुनाने वाली, इतना नाचने वाली सोना धीरे-धीरे क्यों